भारतीय छात्र हुए यूनानी

दीपांजली काकाती

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे भारतीय मूल के छात्रों के बीच खास मकसद के संगठन बनाने की अमेरिकी परंपरा ने जोर पकड़ा।

साभार: डेल्टा सिग्मा आयोटा

साभार: डेल्टा फाई बीटा

उनके नाम यूनानी (ग्रीक) हैं, उनके धार्मिक रीति-रिवाज गुप्त रखे जाते हैं, उनके आयोजनों में प्रवेश केवल आमंत्रण के आधार पर मिलता है और सदस्यों को इस बात की शपथ लेनी होती है कि वे एकता, संस्कृति, अनुशासन और सामुदायिक सेवा के सिद्धांतों का पालन करेंगे। ये लोग ऐसे संगठनों के सदस्य हैं, जिनको छात्र-छात्राओं को यूनानी संगठन कहा जाता है। ये अमेरिका के किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय के छात्र होते हैं। पुरुषों के संगठनों को अंग्रेजी में फ्रैटरनिटी और महिलाओं के संगठनों को सॉरॉरिटीज कहा जाता है। ये कैंपस के बाहर अमूमन एक साथ रहते हैं। बोलचाल की भाषा में इनके संगठनों को 'यूनानी' कहा जाता है, क्योंकि ये अपने संगठन का नाम लिखने के लिए यूनानी वर्णमाला का प्रयोग करते हैं। ये अपने मित्रों और परिचितों की एक ऐसी मजबूत बिरादरी बनाने के लिए भी जाने जाते हैं, जो यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के दौरान एक सामाजिक नेटवर्क बनाने और बाद में कॅरिअर तथा कारोबार के मामले में एक-दूसरे के काम आती है।

अमेरिका में इस समय 12 से ज्यादा दक्षिण एशियाई 'यूनानी' संगठन हैं और इनके 90 प्रतिशत से ज्यादा सदस्य भारतीय मूल के हैं। ये संगठन विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपने चैप्टरों और कॉलोनियों के जरिए अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हैं। पेंसिल्वानिया स्टेट यूनिवर्सिटी में डेल्टा सिग्मा आयोटा संगठन के अध्यक्ष केवन देसाई कहते हैं कि हम लोगों से हमेशा कहते हैं कि हर संगठन वैसा ही नहीं होता है, जैसा कि आप टीवी या *एनीमल हाउस* जैसी फिल्मों में देखते हैं। रात के अंधेरे में ये 'दक्षिण एशियाई यूनानी' समाज सेवा के कामों में जुटे रहते हैं। ये रात में सेना को राहत और बचाव के कामों में मदद देते हैं, किसी राजमार्ग पर लोगों की मदद करते हैं, कैंसर के बारे में जागरूकता फैलाते हैं, अस्पतालों में बतौर स्वयंसेवी कार्य करते हैं और भारत के प्राकृतिक आपदा पीड़ितों तथा चैरिटी के लिए धन इकट्ठा करते हैं।

बाएं से: पेंसिल्वैनिया स्टेट यूनिवर्सिटी के निकट एक वृद्धावस्था केंद्र के बगीचे में काम करते हुए डेल्टा सिग्मा आयोटा के सदस्य चेतन शाह, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजिलीस में इंडियन स्टूडेंट यूनियन के सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए एकत्र सहशिक्षा संगठन डेल्टा फाई बीटा के सदस्य, आस्टिन, टेक्सास के मानसिक रोग अस्पताल में डेल्टा काप्पा डेल्टा सॉरॉरिटी के स्वयंसेवक, पेंसिल्वैनिया में एक देखभाल केंद्र में अन्य संगठनों के साथ वृद्धों की मदद करते डेल्टा सिग्मा आयोटा के सदस्य।

ऑस्टिन की टेक्सॉस यूनिवर्सिटी में डेल्टा एप्सिलॉन साई संगठन के उपाध्यक्ष अनिल नायर कहते हैं कि कई लोग इन संगठनों को किसी पार्टी का सदस्य बनने का जरिया मानते हैं, पर हम यह साफ कर देना चाहते हैं कि हमारे प्राथमिक फोकस में अपने समुदाय और दक्षिण एशियाई लोगों की बेहतरी है। इस सवाल के जवाब में कि जब तकरीबन हर कैंपस में भारतीय छात्रों के संगठन हैं, तो कुछ छात्रों ने यूनानी सिस्टम को क्यों चुना? नायर कहते हैं कि एक आम छात्र संगठन में हर किसी का एक मकसद नहीं होता, जबकि हमारे संगठन में हर सदस्य का एक ही फोकस और लक्ष्य होता है। नायर यह भी कहते हैं कि नए छात्रों को हमारे संगठनों से जुड़े पूर्व छात्रों से भी पढ़ाई, नौकरी और कारोबार के मामले में भी काफी मदद मिलती है।

अमेरिका में दक्षिण एशियाई छात्रों का पहला संगठन 1994 में न्यूयॉर्क की बिनघम्टन यूनिवर्सिटी के आठ छात्रों ने बनाया था। इसके चार साल बाद ऑस्टिन की टेक्सस यूनिवर्सिटी में कप्पा फाई गामा नाम से दक्षिण एशियाई छात्राओं के पहले संगठन (सॅरॉरिटी) का गठन हुआ। अमेरिका में यूनानी संगठनों की कहानी 18वीं सदी से शुरू होती है, जब वर्ष 1776 में वर्जीनिया के विलियम्सबर्ग में कॉलेज ऑफ विलियम एंड मेरी में फाई बीटा कप्पा सोसायटी का जन्म हुआ। इसके बाद 1870 में कप्पा अल्फा थीटा और कप्पा कप्पा गामा नाम के महिलाओं के ऐसे पहले संगठन बने, जो यूनानी अक्षरों का प्रयोग करते थे।

इन यूनानी संगठनों में प्रवेश पाने के इच्छुक लोगों से पहले इंटरव्यू लिया जाता है, टेस्ट होते हैं और उन्हें अपनी प्रतिबद्धता साबित करनी होती है। ऑस्टिन की टेक्सॉस यूनिवर्सिटी में बीटा कप्पा गामा संगठन के राष्ट्रीय बोर्ड के अध्यक्ष सुमित वालिया कहते हैं कि इस इम्तहान में जिन लोगों को एक तय सीमा से कम अंक मिलते हैं, उनको संगठन में शामिल नहीं किया जाता है। महिला यूनानी संगठन डेल्टा कप्पा डेल्टा की उपाध्यक्ष आरती कोदुर के मुताबिक नए सदस्यों के साथ पहली मुख्य समस्या समय की होती है- स्कूल की पढ़ाई के साथ संगठन के कामों में शिरकत कैसे की जाए?

अजय टी. नायर पेंसिल्वानिया यूनिवर्सिटी में 'एशियाई अमेरिकी अध्ययन कार्यक्रम' के सहयोगी निदेशक हैं। वह बताते हैं कि शैक्षिक सत्र की शुरुआत में कई छात्र इन संगठनों में काम करने के लिए बेचैन रहते हैं। इसमें दो राय नहीं कि इनसे जुड़ने पर छात्रों को कई तरह के फायदे होते हैं। उनमें नेतृत्व के गुण विकसित होते हैं, वे समाज सेवा करते हैं और उनको अमेरिका में बसे एशियाई मूल के लोगों को जानने का मौका मिलता है। इसी का नतीजा है कि अमेरिका के कई संगठन भी इन ग्रीक समूहों की खासियतों पर गौर करने लगे हैं। कई संगठनों ने तो बाकायदा बहुसांस्कृतिक यूनानी परिषदें भी बना ली हैं, ताकि ऐसे समूहों को अपने से जोड़ा जा सके।

सिग्मा सिग्मा रो संगठन की राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष शिवानी सेठ के मुताबिक वे नए छात्रों को एक नए माहौल में घुलने-मिलने, उनके समुदाय के लोगों के बारे में जानने तथा एक टीम के रूप में काम करने में मदद करते हैं। शिवानी का मानना है कि इससे छात्रों को अपनी विरासत और अमेरिकी संस्कृति में तालमेल बिठाने में सहायता मिलती है। डेल्टा फाई बीटा पहला दक्षिण एशियाई सहशिक्षा संगठन है। यह अपने सदस्यों को गोष्ठियों के माध्यम से बायो-डाटा बनाने में मदद करता है और विशिष्ट कॅरिअर विकल्पों के बार में तिमाही वर्कशॉप करके उन्हें जानकारी देता है।

अजय नायर कहते हैं कि यहां छात्रों के दक्षिण एशियाई संगठनों ने अपनी पहचान को यूनानी सिस्टम में समाहित कर दिया है। ये संगठन कॉलेज जीवन के सामाजिक पहलुओं को ज्यादा तरजीह नहीं देते हैं। ऐसे कुछ संगठन विशेष कार्यों में अपनी ऊर्जा लगाते हैं। चाई साई बीटा संगठन टेक्सॉस की ए एंड एम यूनिवर्सिटी में सक्रिय है। यह भारत के आठ साल के एक अनाथ बच्चे की शिक्षा और अन्य जरूरतों के लिए पैसा देता है। डेल्टा एप्सिलॉन साई संगठन बाल मधुमेह शोध प्रतिष्ठान के लिए धन जुटाने के मकसद से 30 छात्र संगठनों का फुटबॉल टूर्नामेंट कराता है। अपने इस प्रयास को उसने 'मधु-मुक्त प्याला' नाम दिया है। इसके अलावा यह संगठन हर साल एक कॉर्निवाल (उत्सव) का आयोजन भी करता है। इसको 'साथ आओ परियोजना' नाम दिया गया है। इस कॉर्निवाल में संगीत कार्यक्रम, खेल और झूले आदि होते हैं। यह ऑस्टिन के छात्रों को कक्षा में कड़ी मेहनत करने के बदले दिया जाने वाला ईनाम होता है। इस साल हुए कार्निवाल में करीब 2500 छात्रों और बच्चों ने शिरकत की। इसी अप्रैल में राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश के आह्वान पर बाल शोषण विरोधी महीना मनाया गया। डेल्टा कप्पा डेल्टा सॅरॉरिटी की सभी इकाइयों ने इस दौरान इस मुद्दे पर लोगों को जागरूक करने के लिए कई कार्यक्रम किए। इनसे जो पैसा एकत्र हुआ उसे दक्षिण एशिया में क्राई, यूनिसेफ और अन्य संगठनों को भेजा गया।

ये 'यूनानी' संगठन सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी काफी महत्व देते हैं। इस साल टेल्टा एप्सिलॉन साई ने ऐसे ही एक उत्सव का आयोजन किया। इसमें कैलिफोर्निया के इंडो-अमेरिकी रैप बैंड 'कार्मेसी' ने अपने दिलकश अंदाज से सबको मोह लिया। रसिका माथुर का कॉमेडी शो भी लोगों को खूब

साभार: डेल्टा कप्पा डेल्टा

साभार: डेल्टा सिग्मा आयोटा

पसंद आया। 'सिग्मा सिग्मा रो' ने 2003 में यूनानी देवी-देवताओं की एक सालाना प्रतिस्पर्धा 'कयामत' शुरू की। इसमें दक्षिण एशिया के छह महिला और पुरुष संगठन हिस्सा लेते हैं। इस प्रतिस्पर्धा से मिलने वाला पैसा पिछले दो साल से 'हेल्प' नाम की एक भारतीय संस्था को दिया जा रहा है। पिछले साल डेल्टा फाई बीटा ने लॉस एंजिलीस के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में सक्रिय सभी दक्षिण एशियाई संगठनों का एक सांस्कृतिक सम्मेलन किया। संगठन की कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय इकाई की सह अध्यक्ष प्रीति कोलाचलम कहती हैं कि यह कार्यक्रम दक्षिण एशियाई समुदाय को एक सूत्र में बांधने के प्रयासों का एक हिस्सा था, क्योंकि हमारे सदस्य विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों से आते हैं।

दक्षिण एशियाई छात्रों द्वारा बनाए गए इन संगठनों को आज 12 साल हो गए हैं और कई दक्षिण एशियाई लोग मानते हैं कि वे यूनानी सिस्टम में स्वीकार कर लिए गए हैं, जबकि कइयों का कहना है कि अभी मंजिल थोड़ी दूर है। डेल्टा सिग्मा आयोटा संगठन के उपाध्यक्ष विशद पाठक का कहना है कि पेंसिल्वानिया स्टेट यूनिवर्सिटी में यूनानी समुदाय अपने संगठन को हर साल संजीदगी से लेता है। बीटा कप्पा गामा संगठन के सुमित वालिया का कहना है कि लोग इस बात को महसूस कर चुके हैं कि वे सिर्फ 'यूनानी' ही नहीं बनाना चाहते, बल्कि अपने समुदाय को भी मजबूत बनाना चाहते हैं। कई लोगों का मानना है कि अभी करने के लिए काफी कुछ है। शिवानी सेठ का कहना है कि हमें अपनी ठोस जगह बनानी है। हमारे संगठन अभी इतने लोकप्रिय नहीं हैं, जितने कि अन्य जातीय समूहों के हैं। लेकिन हमारे सामने मौके मौजूद हैं और हम हर साल तरक्की कर रहे हैं। □